

न्नाधुसंपन्नान्संपुक्तान् जवनैर्हृयैः MBh. 3, 14960. संपन्नं राज्यमिच्छन् R. 2, 97, 18. — 9) संपन्नं wohlschmeckend, lecker; subst. Leckerbissen: एकः संपन्नमन्नात्तु यस्ते हरति पृच्छन् MBh. 13, 4567 (vgl. एकः स्वाडु समन्नात्तु 4528). 5, 1011. संपन्नतरमेवानं दरिद्रा भुञ्जते सदा । नुत्स्वाडुतो जनयति 1144. संभाव्यं गोषु संपन्नं संभाव्यं ब्राह्मणो तपः R. 5, 88, 9. संपन्नपूर्वैर्दुःखिर्ममिः 14, 45. संपन्नकारं (= स्वाडुकारं) भुञ्जे P. 3, 4, 26, Sch. — Statt संपन्नो (könnte etwa vollkommen gerüstet bedeuten) M. 7, 200 ist wohl mit der Calc. Ausg. संपन्नो zu lesen. — Vgl. संपत्ति, संपद्. — caus. 1) Jmd Etwas verschaffen, zu Theil werden lassen, zuführen: वाचा देवेभ्यो ह्यव्यं संपादयति Ait. Br. 2, 5. रथम् MBh. 7, 6380. सर्वं संपाद्यामि ते 13, 2867. संपादिताः प्रणयिनो (gen.) विभवाः BHARTR. 3, 68. एवं संपादयन्तस्ते तदान्योऽन्यम् MBh. 4, 336. युष्मद्भोजनम् PANKĀT. 69, 6. स यद्यपि कुरङ्गे मे धात्रापहृतः । तत्राप्ययं कूर्मं आहारार्थं संपादितः 144, 19. तस्यास्वादेन सौख्यं संपाद्यामि जिह्वया (lies जिह्वयै) 61, 14. अमृतं संपादितस्वाडुफलो मे मनोरथः ÇĀK. 108, 15. तेनैव चारकमुद्गापथेन कन्यापुरप्रवेशं भूयो ऽपि मे समपादयत् DAÇAK. in BENF. Chr. 200, 21. sich Etwas verschaffen: ज्ञानं संपाद्य संसारं यः परेभ्यः प्रयच्छति PADMA-P. in Verz. d. Oxf. H. 13, a, 7. पारिशेष्यात्समस्तानिवैतान्संपादयति यदा ÇĀK. zu BRH. ĀR. Up. S. 261. — 2) fertig machen, zubereiten (Speisen), zu Stande bringen, hervorbringen, vollführen, ausführen: येन पुरतः पृष्ठतश्चैकैकं पदं संपादयति PANKĀT. 251, 18. सैदं संपादितानि — मांसानि R. 3, 28, 7. पिप्पलीलवणाभ्यां च मत्स्यांसंपादयिष्यथः 76, 24. सक्तवः संपादिताः zur Erkl. von दृष्यकारदाः P. 6, 2, 9, Sch. तेन (पुरंदरेण) संपादितं सस्यम् gerathen lassen HARIV. 3794. असंपादयतः कंचिदर्थम् Sfr. 281. स्वार्थीसंपादयन्तः BHARTR. 2, 59. शब्दे मरुत्वं संपादयति Schol. zu ĞAIM. 1, 17. तेन तत्तथैव संपादितम् DAÇAK. in BENF. Chr. 196, 14. संपादितं मरुत्खलु PRAB. 31, 3. मेहाद्यस्वामिनो यः प्रतिष्ठा समपादयत् RĀGA-TAR. 5, 28. तन्मूलोद्धृतिरम्भसा — संपादिता 477. संपादिततर्दनं KATHĀS. 26, 204. प्रदर्शितस्तत्र च यः क्रमो द्विजैः । तमाशु संपादय R. GORR. 2, 80, 25. स्वसुः पाणिग्रहणम् RAGH. 7, 26. कृत्स्नताम् ÇĀK. zu BRH. ĀR. Up. S. 261. संपादिता — प्रतिष्ठा मरुती खया MBh. 7, 6411. KATHĀS. 38, 156. कामम् MBh. 13, 4032. BHĀG. P. 6, 18, 35 (med.). स्पृहाम् MBh. 3, 15278. शासनम् RAGH. 9, 82. अदिशम् PRAB. 19, 10. स्वामिन्यागम् 103, 5. शुश्रूषाम् Gehorsam erweisen BHARTR. 3, 48. — 3) vollständig machen: दश ता आहुतीः संपादयेत् ÇĀT. Br. 11, 1, 2. एकादश रत्नानि 5, 3, 4, 12. वां डुःस्थमूनपद्म् — संपादयन् BHĀG. P. 1, 16, 35. — 4) umbilden in: येनैसम् — पुरुषं प्रियं संपादयिष्यसि KATHĀS. 37, 114. — 5) mit Etwas versehen: अन्नं रथम् ÇĀT. Br. 13, 2, 7, 5. 8. 9. भीमं संपाद्यामास रथेन MBh. 6, 2304. क्रियया Jmd beschäftigen, Jmd ein Geschäft übertragen SADDH. P. 4, 19, b. मत्या परीक्ष्य मेधावी बुद्ध्या संपाद्य चासकृत् so v. a. überlegen MBh. 5, 1487. — 6) eins werden, sich vereinigen, übereinkommen: देवा अन्नप्रये न समपादयन् Ait. Br. 2, 25. मध्यमे संपादयो चक्रुः 7, 15. ÇĀT. Br. 2, 2, 4, 16. अवीकपणान्ते परः संपादयति 3, 3, 4. KĀND. Up. 5, 11, 2. KĀTJ. ÇR. 22, 4, 3. LĀTJ. 8, 6, 2. 9, 4, 25. — 7) erreichen, gelangen zu: संपादयंतौ मरु लोकमेकम् AV. 12, 3, 39. पन्नशासनमाक्राशे पतत्तं पत्तिसेविते । अग्निभूय ज्वेनाशु लङ्का संपादये ध्रुवम् R. 5, 3, 40. — Vgl. संपादक, संपादन, संपादनीय, संपादयितर.

— अभिसम् 1) zu Etwas werden, einem Andern gleich werden, übergehen in: (सामनी) विराजं दक्षिणीमभिसमपद्येताम् Ait. Br. 3, 23, 4, 1. TBh.

1, 2, 2. ÇĀK. ÇR. 14, 23, 5. समानं हिकारम् SHADV. Br. 2, 3. ÇĀT. Br. 6, 4, 2, 8. इष्टकामगिरभिसंपद्यते 9, 5, 1, 61. यत्कर्म कुरुते तदभिसंपद्यते 14, 7, 2, 7. श्रोत्रे ह्येमे सर्वे वेदा अभिसंपन्नाः 9, 2, 4. (आनुष्टुभः प्रगाथः) विराजावभिसंपन्नः पद्यात्तर्यं indem er einer zweifachen Virāj (in den Zahlenverhältnissen) gleich wird, einer in Pada und einer in Silben bestehenden, RV. PRĀT. 18, 3. ÇĀK. zu BRH. ĀR. Up. S. 278. — 2) gelangen in, auf: स यद्येकमात्रमभिध्यायीत स तेनैव संवेदितस्तूर्णमेव जगत्यामभिसंपद्यते PRAÇNOP. 3, 3. gelangen zu, erlangen: पुरुषो जायमानः शरीरमभिसंपद्यमानः ÇĀT. Br. 14, 7, 2, 8. देवत्वम् 34. — Vgl. अभिसंपत्ति fg. — caus. gleich machen, umbilden in: विराजमेव तन्मासि मास्यभिसंपादयन्ते यत्ति Ait. Br. 4, 16. ÇĀT. Br. 1, 1, 1, 22. 2, 3, 1, 18. वीर्यमेवैतदाशिषो ऽभिसंपादयति 1, 9, 1, 17. 5, 3, 1, 12.

— उपसम् 1) gelangen zu: गन्धारनिवोपसंपद्येत KĀND. Up. 6, 14, 2. तं देशमुपसंपदे MBh. 11, 363. एकत्वमुपसंपन्ना न त्वासे ऽहं खया मरु 5, 1195. अपरब्रह्मभावमुपसंपन्नः ÇĀK. zu BRH. ĀR. Up. S. 199. उपसंपन्न = प्राप्त H. an. 5, 25. — Das partic. उपसंपन्न hat noch folgende Bedeutungen: 2) fertig, zubereitet (von Speisen) AK. 2, 9, 45. H. 413. an. 3, 25. — 3) vollkommen vertraut mit: देशकालोपसंपन्ना (गो) MBh. 13, 3466. — 4) hinreichend, = पर्याप्त H. an. HALĀJ. 2, 171. — 5) versehen mit: कुसुमैरुपसंपन्ना (नदी) R. 2, 95, 3. गुणैः 1, 7, 5. मङ्गलैः 2, 25, 42. वर्णाश्रुपसंपन्न M. 4, 68. कुलशीलं MBh. 3, 2426. — 6) heimgegangen, gestorben H. 373. H. an. (hier ist मृते st. मृती zu lesen). HALĀJ. 3, 7. श्रोत्रिये तूपसंपन्ने त्रिरात्रमशुचिर्भवेत् M. 5, 81. KULL. erklärt उपसंपन्ने durch मैत्रादिना तत्समीपवर्तिनि तद्गृहवासिनि und ergänzt संस्थिते gestorben aus dem vorangehenden Çloka. geschlachtet, geopfert AK. 2, 7, 26. — Vgl. उपसंपत्ति. — caus. 1) herbeischaffen, verschaffen, zuführen: घृतं श्वेतानि माल्यानि सामिधश्चैव सर्षपान् । उपसंपाद्यामास R. 2, 23, 26. अस्ति नः कोपनिचयो महानविदितस्तव । तमहं वेदं नान्यस्तमुपसंपाद्यामि ते ॥ MBh. 5, 4630. — 2) bei den Buddhisten in den Stand der Priester aufnehmen, Jmd der Priesterweihe theilhaftig machen: स आयुष्मता शारिपुत्रेण प्रव्राजित उपसंपादित अगमचतुष्टयं च ग्राह्यतः BURN. Intr. 48; vgl. उपसंपद्दा bei KÖPPEN, I, 335. 374.

2. पद् (= 1. पद्) oder पाद् m.; sg. पाद् m.; (daneben पद् H. 616, Sch.), पौद्म्, पौद् u. s. w.; du. पौदि, पद्माम्, पौद्माम्; pl. पौद्म्, पौद्म् u. s. w. P. 6, 1, 63. 4, 130. Vop. 3, 39. 145. 146. Die acc. पाद्म् und पौदि können auch auf पाद् zurückgeführt werden, gehören aber in der vedischen Sprache zu पद्. Am Ende adj. comp. P. 5, 4, 138. 40. im fem. °पद् (°पाद्) und °पदी 4, 1, 8. Vop. 4, 17. °पदी P. 5, 4, 139. m. 1) Fuss AK. 2, 6, 2, 22. H. 616, Sch. मरुत्तं चिद्वृद्धं नि क्रमीः पदा RV. 1, 31, 6. उर्व्याः पदे नि दधाति सानौ 146, 2. 5, 54, 11. ये ते श्येनः पदाभरत् 8, 71, 9. अथः सपत्ना मे पदारिमे सर्वे अभिष्ठिताः 10, 166, 2. AV. 3, 7, 2. 4, 14, 9. पद्भ्यां प्रति तिष्ठतु 5, 30, 13. 10, 1, 21. 11, 8, 14. MUNP. Up. 2, 1, 4. मरुद्धन् जयैम पत्सु RV. 8, 57, 9. VS. 9, 8. 4, 19. 23, 20. समीचो कैवायं पशुः पदे हरेत् ÇĀT. Br. 3, 8. 2, 27. 2, 1, 4, 24. Ait. Br. 2, 6. उभयतः पात्पुरुषः 5, 33. — पाद्म् M. 6, 46. पदा 4, 207. 11, 43. 188. JĀGĀ. 1, 155. MBh. 2, 2374. 4, 461. MĀK. P. 14, 59. 51, 91. 77, 29. पौदि M. 2, 71. 4, 52. 65. 5, 142. 8, 125. JĀGĀ. 1, 207. पद्माम् PANKĀT. 260, 13. केचिद्वृत्तैः कौरैः केचित्केचित्पद्भ्यां (du.) कृता गजैः MBh. 3, 2543. कथं पद्मामिह प्राप्ति zu Fuss R. 1, 48, 4. SĀV.